उ.प्र. हिन्दी संस्थान द्वारा 'धर्मयुग सर्जना पुरस्कार' से सम्मानित

मूल्य : ₹ 50/-

वर्ष 19 - मई-अगस्त 2025

संपादक : कृष्ण बिहारी

# निकट-41

# निकट

**संयुक्त अरब इमारात से शुरू, अब भारत से प्रकाशित**

**कथा प्रधान त्रैमासिकी, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान द्वारा धर्मयुग सर्जना पुरस्कार से सम्मानित**

**वर्ष : 18, अंक-41, मई-अगस्त 2025**
**Editor: Krishna Bihari**
**HIG-46, B Block, Panki**
**Kanpur-208020**
**mobile: 6307435896**
**email: krishnatbihari@yahoo.com**

**प्रति रुपए 50/-**
**वार्षिक रुपए 500/-**
**तीन वर्ष रुपए 1500/-**
**(डाक खर्च अलग से )**
**भुगतान ऑन लाइन या सीधे बैंक में भी जमा कर सकते हैं :**

**बैंक : बैंक ऑफ बड़ोदा**
**खाता संख्या : 28050100010192**
**खाता धारक : Krishna Behari Tripathi**
**आई एफ एस सी : BARB0SAPRBS**
**बैंक शाखा : सराय मसवानपुर ब्रांच, कानपुर**
**उत्तर प्रदेश**

भारती भाषा संवर्धन संस्थान
द्वारा सहयोग प्राप्त

**6307435896@ybl**

**सर्वाधिकार : सुरक्षित**
प्रकाशित सामग्री के लिए लेखक और प्रकाशक की अनुमति आवश्यक है। प्रकाशित रचनाओं के विचार से प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं। किसी प्रकार के विवाद लखनऊ न्यायालय में विचारणीय।
मुद्रक : अमन प्रकाशन, 104-ए / 80-सी, कानपुर, (उ. प्र.) मो.- 9044344050

**निकट पत्रिका से संबन्धित सभी पद अवैतनिक**
**संपादक,स्वामी कृष्ण बिहारी, एच आई जी-46,पनकी बी ब्लॉक,कानपुर-208020 से प्रकाशित।**

निकट

संस्थापक – अशोक कुमार

**संपादक – कृष्ण बिहारी**

**उप संपादक**

धनंजय कुमार सिंह

भूपेन्द्र कुमार सिंह

**सहयोगी**

राधेश्याम यादव

राम नारायण त्रिपाठी

**व्यवस्थापक**

अभिनव त्रिपाठी

**कानूनी सलाहकार**

राजेश तिवारी एडवोकेट

2/241, विजयखंड, गोमती नगर

लखनऊ

**आवरण**

शशि भूषण बडोनी

**रेखांकन**

निर्देश निधि, ऋद्धिमा सिंह, पाखी मिश्रा

**अगला अंक 42, संस्मरण विशेषांक**

**सितंबर-दिसंबर 2025**

**इस अंक में -**

**संपादकीय :**

**संपादक के अपने सुख-दुख भी होते हैं...** 03

**पिछले अंक की प्रतिक्रिया –**

**निकट-40: एक संपूर्ण कहानी विशेषांक - अशरफ़ अली** 05

**कहानी-**

**अपहरण** - इला प्रसाद 07

**तसवीर** - श्याम सुंदर चौधरी 10

**गांठ** - गोविन्द उपाध्याय 13

**हुड़क** - प्रगति गुप्ता 18

**पिता की गंध** - कल्पना मनोरमा 22

**अरण्य** - रेणुका अस्थाना 28

**पैरासाइट** - प्रियंका गुप्ता 34

**भरोसा** - पूनम मनु 38

**भालचंद्र डिब्बे वाला** - डॉ. रंजना जायसवाल 43

**बाबा लॉयन बनो ना !** - धनंजय सिंह 48

**चिनार के झड़ते पत्ते** - डॉ. गीता शर्मा 52

**रंजिश ही सही दिल ही दुखाने**...- रत्ना श्रीवास्तव 56

**कवितायें - यतीन्द्रनाथ राही, जयराम जय,** 63

**पारुल तोमर, साधना मिश्रा**

**लघुकथा - अशोक गुजराती, डॉ. रमेश यादव,**

**कौशल पाण्डेय**

**विशेष -**

**आंडाल और अक्क...** - सुभाष राय 67

**आज के युग में AI का महत्व** - मुमुक्ष्या बैठारु 81

**आर्टिफिशियल इंटेलिजेंसः विनाश...** - हेतवी पटेल 82

**आर्टिफिशियल इंटेलिजेंसः वरदान...**- कश्यप 84

**कृत्रिम बुद्धिमत्ता के पक्ष पर विचार** – पीहू 86

**कृत्रिम बुद्धिमत्ता का विपक्ष** - कृशा शर्मा 88

**व्यंग्य-**

**लतियाये हुए सट्टेबाज** - समीक्षा तैलंग 89

**समीक्षा-**

**सहज कथा सौंदर्य की कहानियाँ** - निरुपमा सिंह 91

**तीजन- जिनके बाजुओं में तम्बूरा...**- अरुणेन्द्र नाथ वर्मा 93

**संवेदन शून्य व्यवस्था पर करारे ...**- डॉ. राकेश शुक्ल 95

संपादकीय

# समय से बात

**संपादक के अपने सुख-दुख भी होते हैं .....**

**जी**वन की विचित्रता बड़ी रहस्यमय है। कुछ पता नहीं होता कि हमारे जीवन में कब कैसा समय अपनी गत्यात्मकता या स्थिरता लेकर उपस्थित हो जाए। समय कभी रुकता तो नहीं लेकिन कभी-कभी ऐसा लगने लगता है कि समय ठहर गया है। प्रायः जो कुछ भी घटित होता है वह हमारे किए गए निर्णयों का प्रतिफल होता है लेकिन परिणाम को देखकर हम उसकी तात्कालिकता के प्रभाव में उन पलों को याद नहीं कर पाते जिनकी वजह से परिणाम देखने को मिला। उसकी विवेचना, विश्लेषण, मीमांसा आदि में से जो भी शब्द चुनना चाहें, वह एक अंतराल के बाद न जाने कितने तर्कों और कुतर्कों के बीच गुजरते हुए अपने होने को न्यायसंगत ठहराता है। दुनिया में कोई भी ऐसा नहीं है जिसके सामने समस्याओं और चुनौतियों की सूची न हो। जीवन इन्हीं से दो-चार होते हुए सरकता है। मैं इस दुनिया से अलग नहीं हूँ, इसी दुनिया में हूँ।

मुझे यह सत्य समझने में अब कोई भ्रम नहीं रहा कि स्वारथ लागि करहिं सब प्रीती। दुनिया में अगर कहीं अनकंडीशनल प्रेम है तो वह केवल और केवल किसी पशु या फिर प्रकृति से ही मिल सकता है। इसलिए किसी को दोष देना, उसकी निंदा करना, कलंकित करना किसी तरह भी उचित नहीं लगता। जिनसे कभी मीठे बोल बोले हैं उन्हें कोई कड़वी बात न कहने का संकल्प मेरी प्रतिज्ञा है। इस मामले में मैं चुप रहकर उस स्वार्थी रिश्ते से हमेशा के लिए अलग हो जाता हूँ क्योंकि वही मुझे सही समाधान लगता है। ख़ैर, इस संपादकीय में किसी नितांत व्यक्तिगत क्षति या निजी दुख की बात न करते हुए एक संपादक के सुख-दुख की बात करना चाहता हूँ।

22 जून को 'निकट' का नामकरण हुए 19 और प्रिंट में सामने आए 18 वर्ष हो जाएंगे। 'निकट' की इस यात्रा में मुझे देश और विदेश में बसे हिन्दी रचनाकारों से जहां सहयोग मिला वहीं उनसे परिचित होने के अवसर भी मिले। इक्कीसवीं सदी के पहले दशक तक साहित्यिक दुनिया इतनी असमृद्ध और असहिष्णु नहीं हुई थी। आत्ममुग्धता के सामने लक्ष्मण रेखा थी। परिस्थितियाँ बदलती हैं। बदलाव होता है। परिवर्तन नियम है। प्रायः इसे शुभ संकेत ही माना जाता रहा है लेकिन दशक बीतते-बीतते साहित्यिक दुनिया का परिदृश्य जिस बदलाव का शिकार हुआ वह कुरुपता के साथ-साथ वीभत्सता के नए प्रतिमान गढ़ने की भूमिका में आ गया। नीम के पत्ते कड़वे होते हैं मगर उनमें गुणवत्ता होती है परंतु यहाँ मेरा आशय नीम के कसैले स्वाद से है। बाज़ार में नीम के पत्तों को जाफरान कहा जाने लगा। और बाज़ार भी ऐसा कि जिसमें दूकानदार तो सभी हैं लेकिन ग्राहक एक भी नहीं। गुण-ग्राहक तो खैर, दूरबीन लेकर ढूढ़ने से भी नहीं दिखता। रचनाकारों की एक ऐसी खेप टाइचुन धान ( सन 1965 में खाद्यान संकट के समय हुई हरित क्रान्ति के दौरान बिकसित हुई किस्म ) की तरह या फिर मरे हुए अमरीकी लाल गेंहू की तरह उत्पन्न हुई जो न देखने लायक है और न ही कुछ सोचने लायक। खाने लायक ( पढ़ने और पचाने ) लायक तो बिलकुल ही नहीं। यह उत्पादकों की वह जमात है जिसके पास पैसा आ गया है। अश्लील ढंग से कमाए पैसों की जो दुर्गति होती है वह इनके द्वारा किस तरह की जा रही है उसे कौन नहीं देख रहा। इस पीढ़ी से पहले के लेखकों को पाठक बताते थे कि उन्होंने अमुक रचना या कृति पढ़ी है। लेखक और पाठक एक-दूसरे से व्यक्तिगत रूप से परिचित नहीं होते थे लेकिन उनके बीच एक भावनात्मक रिश्ता रचना के माध्यम से होता था। लेकिन आज की रचनाकार पीढ़ी को इंटरनेट के माध्यम से मित्रों को बताना पड़ रहा है कि इनकी अमुक रचना मित्रों के आग्रह पर यहाँ या वहाँ उपलब्ध है। कोई पाठक इन्हें कभी नहीं मिलता। मित्र मिलते हैं। दुनिया जानती है कि साहित्यकार के मित्र साहित्यकार नहीं होते और जो मित्र होते हैं उन्हें साहित्य से कोई मतलब नहीं होता। कोई मित्र इन्हें पढ़ना कभी नहीं चाहता। उसे साहित्य से कोई लेना-देना नहीं। लेकिन मित्रों के आग्रह पर रचना आपके सामने पटक दी जाती है। पटकी हुई रचना को आप दुबारा क्यों पटकेंगे ? इन उत्पादकों को किसी पत्रिका का नाम भर पता चलना चाहिए, बस ! फिर ये उसे खोज निकालते/निकालतीं हैं और फिर, रचना पत्रिका के दरवाजे और संपादक के सिर पर। जिन्होंने पत्रिका की शक्ल भी नहीं देखी होती, उसे हिन्दी साहित्य की सिरमौर, अग्रणी और प्रतिष्ठित पत्रिका बताने का कीर्तिमान रचते हुए, उसमें रचना पटक दी। संपादक की अस्वीकृति पर तुरंत दूसरी कालजयी कृति उसके सिर पर पटक दी जाती है। बेदाम और कौड़ी का तीन बिना बिका हुआ माल इनके गोदाम से बाहर निकलने के लिए सिर धुन रहा होता है और ये धुनिया की तरह संपादक को धुनने लगते हैं। इसी जमात की तरह एक और विशिष्ट प्रजाति है जो एजेंडा चलाती है। इनकी कविता हो, कहानी हो, उपन्यास हो ; एजेंडा उसमें हर हाल में होगा। चाहे वह एजेंडा काल के गर्त में समा चुका हो मगर यह जमात एक विलुप्त होती हुई प्रजाति की तरह अभी जीवित बची हुई है। इनका एक संगठित गिरोह है। हालांकि उसमें सरपंच चुनने के लिए पाँच लोग भी नहीं हैं इसलिए चारो सरपंच हैं। हर शहर में यह गिरोह अपने कुकृत्यों की वजह से कुख्यात है। एक जमात और है जो आत्ममुग्धता और अहंकार की शिकार है। उसकी रचनाएँ तीनों लोक में छप चुकी हैं इसलिए संपादक उसकी रचना को अवश्य अगले ही अंक में बिना कोई पंक्ति काटे या रचना को संपादित किए बगैर छापे। साथ में तुर्रा यह कि अगर कभी इन्हें प्रकाशित किया जाये और इनका नाम इंडेक्स में किसी नाम के नीचे आ जाये तो इन्हें लगता है कि ये कालापानी की सजा पा गए हैं। इंडेक्स में नाम अगर इनके हिसाब से न हो तो ये अपनी उपलब्धियों का ऐसा खाका प्रस्तुत